# भूमिका

भारतीय समाज में जाति के प्रश्न ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक जीवन को जिस प्रकार प्रभावित किया है वह किसी से छिपा नहीं है। साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। जाति को समाज में सिर्फ एक हथियार के रूप में नहीं बल्कि वर्चस्व स्थापित करने के लिए भी इस्तेमाल किया गया है, इसका उदाहरण भारतीय समाज में दलितों पर हो रहे शोषण एवं अत्याचार के मामले में देख सकते हैं। साहित्य में भी दलित समाज की संवेदनाओं को न के बराबर जगह दी गई है, जबकि हर वर्ष हजारों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और वह अलमारियों तक की सीमित रह जाती हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में दलित समाज के रचनाकारों ने साहित्य के सरोकार एवं मानवीय संवेदना के आधार पर दलित साहित्य की रचना प्रारंभ की। दलित साहित्य संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार एवं वंचित समाज को उनका हक दिलाने की बात करता है। दलित साहित्य पर डॉ.. भीमराव अंबेडकर के विचारधारा के प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता है। यह साहित्य दलित समाज के जीवन का हिस्सा है इसलिए यह जीवन के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है।

मेरे शोध का विषय 'हिंदी एवं मराठी की दलित आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन' है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज में परास्नातक करने के दौरान दलित विमर्श पढ़ने में मेरी रुचि उत्पन्न हुई। दलित साहित्य और हाशिए पर रह रहे समाज के प्रति जानने की जिज्ञासा पैदा हुई। इसी रुचि के आधार पर मैंने एम. फिल. 'दलित साहित्य में अभिव्यक्त भूमि समस्या' नामक शीर्षक से अपना अलग लघु शोधप्रबंध हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में जमा किया। पीएच.डी. करने के लिए 'हिंदी एवं मराठी की दलित आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन' को अपना विषय चुना, जिसमें मेरे शोध निर्देशक डॉ. अरविंद सिंह तेजावत ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शोध प्रबंध के पहले अध्याय में भारतीय समाज के अध्ययन की पद्धतियाँ और दलित समाज के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा की है। समाज अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ और भारतीय समाज

विचारकों के परिपेक्ष्य में दलित समाज की चर्चा की है। दूसरे अध्याय में हिंदी एवं मराठी की दलित आत्मकथा की परंपरा के विषय में बताया है। आत्मकथा के उद्भव एवं विकास के साथ अन्य विधाओं की भी बात की गई है। तीसरे अध्याय में साहित्य और समाजशास्त्र के संबंध एवं साहित्य का समाजशास्त्र और दलित आत्मकथाओं के बीच के संबंध को विश्लेषित किया गया है। विश्लेषण के आधारों पर दलित आत्मकथा को देखने का प्रयास किया है। चौथे अध्याय में मराठी की दलित आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है, जिसमें मराठी समाज और दलित समाज के संबंधों को दिखाया है, इसके उपरांत साहित्य का समाजशास्त्र और मराठी की दलित आत्मकथाओं के बीच के संबंध को बताया है। इसके उपरांत मराठी दलित आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया है। पाँचवा अध्याय जो कि मेरे शोध प्रबंध का मुख्य अध्याय है, जिसमें हिंदी एवं मराठी की दलित आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। मराठी दलित साहित्य की आत्मकथा एवं हिंदी दलित साहित्य की आत्मकथाओं के क्या संबंध है और उनके समाजों में क्या-क्या भिन्नताएँ हैं। उपसंहार में हिंदी दलित आत्मकथा एवं मराठी की दलित आत्मकथाओं की आलोचना की। उनमें वर्णित शोषण के माध्यमों की चर्चा की है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय निर्धारण से लेकर शोध प्रबंध की पूर्णता तक कई लोगों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस कड़ी में मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। उनके कुशल निर्देशन में मेरा यह शोध कार्य अपनी परिणत तक पहुँच पाया है। शोध लेखन के दौरान उन्होंने हर प्रकार से मेरी सहायता की तथा समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन करते हुए शोध के प्रति दृष्टिकोण से मुझे अवगत कराया। विभाग के प्रभारी डॉ. अमित कुमार तथा आदरणीय डॉ. सिद्धार्थ शंकर राय के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

माता श्रीमती गीता देवी- पिता श्री अमृतलाल के ऋण से उऋण नहीं हुआ जा सकता है फिर भी शोध कार्य में उनके सहयोग के लिए आजीवन उनका ऋणी रहूँगा। भाई राहुल कुमार और राकेश

कुमार के अमूल्य योगदान के लिए उनका आभारी हूँ। मित्रों का सहयोग मुझे हमेशा प्राप्त होता रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त करना महज खानापूर्ति होगी।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक एवं गैरशैक्षणिक कर्मचारियों, हिंदी विभाग के सभी शोधार्थियों तथा परास्नातक के सभी विद्यार्थियों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

दिनांक -.....  अतुल कुमार

स्थान- ह. के. वि., महेंद्रगढ़